Indexed 1675
GENERAL IMPACT FACTOR
INTERNATIONAL PEER Reviewed JOURNAL
ISSUE-18 VOL-1 IMPACT -2.2042 ISSN-2454-6283 OCT - DEC-2019

शोध-ऋतु

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पत्ता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

शोध - ऋतु Shodh-Rityu

तिमाही शोध-पत्रिका

PEER Reviewed JOURNAL

ISSUE-18 VOLUME-1 IMPACT FACTOR-2.2042 ISSN-2454-6283 Oct.-Dec., 2019

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

९४०५३८४६७२

तकनीकि सम्पादक

अनिल जाधव,

मुंबई

पत्राचार हेतु पता->

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,हनुमान गढ़ कमान के सामने,नांदेड-४३१६०५

ISSUE-18 VOL-1 IMPACT -2.2042 ISSN-2454-6283

अनुक्रमणिका

1. समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी चेतना –प्रा. डॉ. अंजली चौधरी–05
2. नारी विमर्श और हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ–जयश्री नायक–08
3. अरुण कमल की कविता में प्रकृति चित्रण–रजनी कुमारी पाण्डेय–13
4. 'संकेतार्थ वैज्ञानिक आलोचना : सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक चिंतन'–शिल्पी कुमारी सिंह–17
5. भारत में राजनीति के अपराधीकरण की समस्याः एक अध्ययन–मनोज कुमार वर्मा–22
6. समकालीन कविता : मानवीय मूल्यों की अवधारणा–डॉ. अनिता कुमारी यादव–26
7. हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों का सहपाठियों के साथ समायोजन एवं उनके व्यवहारगत समस्याओं के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन–अमित सिंह–30
8. डूंगरपुर जिले की जलवायु एवं प्राकृतिक वनस्पति–विनोद पाटीदार–38
9. नागार्जुन के काव्य में व्यंग्यः–एक अवलोकन–डॉ0 राजीव कुमार–41
10. डूंगरपुर राज्य की सांस्कृतिक विविधता–पाटीदार दिनेश कुमार–45
11. भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में बेरोजगारी की समस्या–मंजुला अग्रवाल–डॉ.साहिरा बानू बी.बोरगल–53
12. हिंदी के विकास में अनुवाद का योगदान–प्रा. डॉ. बेवले ए. जे–47
13. आदिवासी जीवन का पारिस्थितिक सन्दर्भ और समकालीन हिंदी कविता–प्रणीता .पी ,हिंदी विभाग–51
14. साहित्य में प्राकृतिक पर्यावरणीय चित्रण–डॉ. चावडा रंजना यदुनंदन–56
15. हिंदी भाषेतील आत्मकथने–'डॉ. सविता खोकल–58
16. STUDY OF FISH FAUNA OF THE YAMUNA RIVER AT PRAYAGRAJ(U.P.) INDIA Dr. Indra Mani Pandey-60
17. बदीउज्जमॉ की कालजयी : रचनाएँ तथा चरित्र सृष्टि–प्रा.डॉ. इंगोले.एम.डी–65
18. ज्ञानोदय विद्यालयों के विद्यालयीन वातावरण और विद्यार्थियों कीशैक्षिक उपलब्धि का अध्ययनः–श्रीमती कमलेश शर्मा– डॉ0 सुबोध सक्सेना– डॉ0 हेमंत कुमार खण्डाई–68
19. गोदान का गोबर महतोः युवा चेतना का बीजांकुर–डॉ. हरेराम सिंह–72
20. .मणिपद्म एवं प्रमुख उपन्यासकारक उपन्यासमे दलित चेतनाक विमर्श–रोहित रमण राघव–75
21. मृणाल पाण्डे का उपन्यास–साहित्य–आलोक प्रेमी–80
22. A Review- On Nanomaterials and their Impact on Human health Kamlesh Kumar, Pradeep Kumar-85
23. समकालीन हिन्दी गज़ल और मुनव्वर राना–डॉ.सचिन कदम–90
24. मा.रामदासिया कांशीरामजी हरिसिंहजी यांचे धम्म व सांस्कृतिक चळवळीतील योगदान :एक चिकित्सक अभ्यास–प्रा.पालकर प्रशांत –94
25. उपन्यासों में किसान जीवन–प्रा.डॉ.ठाकुर व्ही.सी.–98
26. डोगरी लिपि दा संस्कृत लिपि देवनागरी तगर दा सफर–सतीश कुमार–101
27. विश्वभाषाओं से हिंदी में अनूदित भावबोधपरक साहित्य–प्रा.भारती महादेव सानप–103
28. ऊसशेतीचे व ऊस उद्योगाचे चित्रण करणाऱ्या कादंबऱ्यांतून आलेली प्रादेशिकता–प्रा.डॉ. बाबुराव खंदारे,–106
29. वेब सर्चिंग की उपयोगिता–डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव–109
30. मा.कांशीरामजी रामदासिया यांचे वृत्तपत्र व प्रसार माध्यमाच्या चळवळीतील योगदानः एक चिकित्सक अभ्यास .प्रा. प्रशांत पालकर–111
31. 31.आंबेडकरी कथेचा उदय व विकास : एक आकलन–प्रा.डॉ. बाबुराव खंदारे,–115

17.बदीउज्जमॉ की कालजयी : रचनाएँ तथा चरित्र सृष्टि

प्रा.डॉ. इंगोले.एम.डी.
(शोधनिर्देशक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष)
कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,गंगाखेड

हिंदी कथा साहित्य में 'ख्वाजा बदीउज्जमॉ' एक प्रतीभा संपन्न कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित है। वे अपने कथा साहित्य के द्वारा वर्तमान व्यवस्था तंत्र और समाज जीवन की वास्तविकता का पर्दाफाश करने वाले सशक्त हस्ताक्षर हैं। इसलिए उन्होंने समकालीन हिंदी कथा साहित्य के इतिहास में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है। उन्होंने कहानी, उपन्यास और नाटक तथा हिंदी साहित्य की अन्य गद्यात्मक विधाओं में लेखन कर अपनी अद्‌भुत प्रतीभा का परिचय दिया हैं।

बदीउज्जमॉ ने हिंदी कथासाहित्य को 'एक चूहे की मौत', उठा तंत्र', 'छाको की वापसी' और 'अपुरूष' जैसे कालजयी उपन्यास और 'परदेशी', 'अंतिम इच्छा' और 'दुर्ग' जैसी कहानियॉ अक्षय निधि के रूप में दी हैं, जो अनंत काल तक हिंदी कथा साहित्य के पटल पर अपनी विशिष्टता के कारण अमीट छाप छोड देती हैं।

'परदेशी' बदीउज्जमॉ की महत्वपूर्ण कहानी है। यह देश–विभाजन के नकलीपन को बडे ही मार्मिक ढंग से उद्‌घाटित करती है। साथ ही विभाजन की त्रासदी की मार्मिक अभिव्यक्ति 'अंतिम इच्छा' कहानी में देखी जा सकती है। उनकी 'दुर्ग' यह फैंटेसी शैली में लिखी प्रतिकात्मक कहानी है। इसमें 'दुर्ग' प्रतीक है, पूँजीवादी, सामंती,सफेद पोशी, शोषक भ्रष्ट व्यवस्था का। इस में लेखक ने चरित्रों के नामकरण क,ख,ग,घ आदि अक्षरों में किये हैं। यह उनका नया प्रयोग है। 'एक चूहे की मौत' उपन्यास के माध्यम से मनुष्य जीवन की वास्तविकता को पकडने के लिए जटिलत्म फैंटेसी प्रतिकात्मक शैली का प्रयोग किया है। यह बदिउज्जमॉ का बहुत ही लोकप्रिय बहुचर्चित और बहुआलोचित, पुरस्कार प्राप्त उपन्यास है। यह उपन्यास के परंपारित चले आ रहे मानदंडों को खंडित ही नहीं करता अपितु हिंदी उपन्यास विधा को नई दृष्टि तथा दिशा भी प्रदान करता है। यह कार्यालयी व्यवस्था तंत्र का आतंक तथा उसकी भयावहता मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देती बल्कि उसे अमानवीय और क्रूर बना देती हैं। इसी बात का यह उपन्यास बेबाक चित्रण करता है। इसीलिए यह दफ्तरी व्यवस्था तंत्र का प्रामाणिक दस्तावेज माना जाता है।

'छाको की वापसी' लेखक का प्रसिध्द उपन्यास है, जो भारत–पाक विभाजन की त्रासदी तथा सांप्रदायिक जुनून,राजनीतिज्ञों की षडयंत्रकारी स्वार्थजनित भावभूमि पर आधारित हैं। 'अपुरूष' उपन्यास वर्तमान भ्रष्ट शिक्षा संस्थाओं के शिकंजे में फॅसे व्यक्ति की मनःस्थितियों का जीवित दस्तावेज है। 'छठातंत्र' बदीउज्जमॉ का यह भी बहुचर्चित और अनूठा प्रतीक प्रयोग हैं। इसमें अपात्काल का रूपकात्मक कथा के द्वारा उद्‌घाटन होता है।

साठोत्तरी हिंदी कथा साहित्य विभिन्न स्तरों पर व्यक्ति मन का वैज्ञानिक विवेचन करता है। बदीउज्जमॉ की रचनाओं में चरित्रों के मनोविश्लेषण के पीछे घटनात्मक यथार्थ निश्चित रहता है। उनकी रचनाओं में कथाओं के बीच कथाएँ (अण्डर प्लांट) याने अंतर कथाएँ भी रहती हैं। वह अपना निश्चित रूप ग्रहण करते हुए मूल कथा–संवेदना के साथ जुडकर अर्थगत सार्थकता पाती है। परंतु सामान्यतः "यह कला अधिक अच्छी नहीं मानी जाती लेकिन विवरणों में खोई समकालीन कहानी को बदीउज्जमॉ ने उस आधार पर ताजगी दी है।"1

बदीउज्जमॉ की कथा रचनाओं 'कहानी' और 'उपन्यासों' में कथावस्तु का छीतरापण हैं, उसमें गठीलापण गौण है, क्योंकि उसमें मूल विषय–वस्तु को संप्रेषण की दृष्टि से लक्ष्य माना गया है। घटनाएँ कृत्रिम और पात्र बेजान कठपुतलियॉ नहीं हैं, जो लेखक के इशारों पर नाचते हैं बल्कि

जो हैं, जैसे हैं वैसे ही अपने वास्तविक रूप में प्रस्तुत होते हैं। इसलिए वे स्वाभाविक और विश्वनीय लगते हैं। वे प्रतीकात्मक होते हुए भी अपनी विशिष्ठ व्यक्ति सम्पन्नता को बनाये रखते हैं। चरित्र और घटनाएँ अपने परिवेश के साथ स्वाभाविक तथा पूरी सजीवता के साथ बहुत गहरे में जुडे हुए हम पाते हैं, न कि उससे टूटे हुए। इससे कथाकार की सामान्य मनुष्य की ओर देखने की दृष्टि भी उजागर होती है।

बदीउज्जमॉ के चरित्रों संबंधी धर्मेंद्र गुप्त लिखते हैं, "आज के बाहरी जीवन के प्रभावों से छूटकारा पाना कठिन है, लेकिन छेला सांदु,अन्नु,दुल्हन ममानी, कमाल भाई, ललवानी, राहत तुफैल अहमद जैसे पात्रों से संस्कारगत मिली निकटता को प्रमुखता देना भी आवश्यक हैं। बदीउज्जमॉ का कथाकार ऐसे पात्रों के बीच ही अपनी पूरी प्रतीभा और भक्ति के साथ उभरता है और कथा के ऐसे कोण सामने लाता हैं, जो अनजाने ही अविस्मरणीय हो जाते हैं।"2

निम्न चरित्रों के अलावा और कुछ ऐसे भी चरित्र हैं, जिन्हें भूल पाना असंभव–सा हैं। उनमें 'छाको', 'सुक्खी मियॉ', 'रशीद चाचा', 'मौलवी इसहाक', गांधी भाई', 'मोहम्मद खलिफा' और 'ढल्लन सिंह; आदि प्रमुख हैं। यह चरित्र अपनी अलग–अलग विशेषताओं के कारण पाठकों के मन पर अपनी अमीट छाप छोडते हैं। इन चारित्रों के संक्षेप में देखा जा सकता है।

बदीउज्जमॉ के चरित्रों की यह खास विशेषता है कि, वे अपनी मिट्टी की आकांक्षा में तरसते–तडपते और दम तोड देते हैं। प्रकृतिता मनुष्य एक दिन जैसे जन्म लेता है, वैसे ही एक दिन मरता भी है। मरते समय व्यक्ति जहॉ पैदा हुआ, पला–बढा, जिन लोगों के बीच रहा उन सब को याद करता हैं। बदीउज्जमॉ के महत्वपूर्ण चरित्रों की भी यही विशेषता है। उनके 'छाको', 'रशीद चाचा', 'कमाल भाई', 'छोटे अब्बा', 'दादा', 'दादी अम्मा', और 'पैठाणी नानी', ऐसे ही चरित्र हैं, जिनका अपनी मिट्टी से गहरा लगाव हैं। ये चरित्र मृत्यु समयी स्वजनों के सम्मुख यह असीम इच्छा प्रकट करते हैं कि उन्हें अपनी पुरखों की जमीन में, पुरखों की कब्रों के पास दफनाया जाए। जहॉ उनका जन्म हुआ, बचपन बीता, जिस महौल में वे पले–बढे,अपनी जिंदगी का अधिकांश समय बिताया वहॉ की मिट्टी अंत में भी नसीब हो। वास्तम में यह मिट्टी की कशिश हर मनुष्य को खिंचती है।

ऐसी विशेषताओं से युक्त चरित्रों को बदीउज्जमॉ के कथा साहित्य में 'घर', 'परदेश', 'अंतिम इच्छा' इन कहानियों तथा 'छाको की वापसी' और 'सभापर्व' उपन्यासो में खोजा जा सकता हैं। 'परदेशी' कहानी का 'छाको' पाकिस्तान जा बसने पर भी वह अपनी जन्मभूमि (भारत) में रहने के लिए तडपता है। रूहानी तौर से उसका रिश्ता गया के लोगों,तीज त्यौहारों, मुहर्रम, बिहारी संस्कृति से जुडा हुआ है। 'घर' काहानी के 'रशीद चाचा', नैरेटर 'मैं' के अब्बा से कहते हैं;

"तुम्हें नासिरपुर बहुत याद आता होगा। वतन फिर भी वतन है। मुझे देखो, यहॉ अकेला रहता हूँ। एक लडका था, वह भी पाकिस्तान चला गया। अब अपना कोई भी तो नहीं है यहॉ। लेकिन फिर भी यहॉ से हटने को जी नहीं चाहता। 'शकील' बहुत बुलाता है। उस से मिलने की ख्वाहिश तो बहुत होती है लेकिन डरता हूँ कहीं वहॉ की मिट्टी ही न लिखी हो। चाहता हूँ मिट्टी नासिपुर की ही नसीब हो।"3

अंतिम इच्छा' कहानी का चरित्र 'कमाल भाई' साम्प्रदायिक जुनून में पाकिस्तान तो जा बसता है, पर वहॉ जाकर पश्चाताप की आग में जलता हैं। जीवन की अंतिम घडी में मृत्यु शैया पर पडा बीवी से कहता है, 'मुझे गया ले चलो अम्मा के पास। मैं कराची के रेगिस्तान में मरना चाहता। मुझे वहीं दफन करना फल्गू नदी के उस पार कब्रिस्ताान में जहॉ अब्बा की कब्र है और बडे अब्बा की।"4

'छाको की वापसी उपन्यास का चरित्र 'छोटे अब्बा' का देहान्त पाकिस्तान में हुआ। हबीब भाई के पत्र द्वारा उनकी कही हुई बात नैरेटेर 'मैं' के दिमाग में गूँजती है, "अब्बा के आखिरी उल्फाज थे "मुझे गया ले चलो, भैया के पास ही दफन करना मुझे। लेकिन ऐ कैसे मुमकिन था।"5

'सभापर्व' उपन्यास के 'दादा' जब बीमार पडे थे और अपने जीवन की अंतिम घडियॉ गिन रहे थे, तब वे कहते हैं, "हमको

से ले चलो। भदासी ले चलो। मैं यहॉ मर गया तो सब यहीं गाड देंगे।"6

ठीक यही इच्छा 'दादी अम्मा' की थी, जो अम्मा के व्य से जान पडती है। 'दादा' की तरह 'दादी अम्मा' ने भी था; "देखो हमको भदासी में ही गाडियों अपने अब्बा के । ऐसा न हो कि तुम सब मुसंडा में गाड दो हमको।"7

वजाहत मामूं की अम्मा 'पैठनी नानी' ने भी ऐसी ही वजाहत मामूं के सामने रखी थी कि उन्हें अपनी पुरखों जमीन (अमावस) में ही दफ्न किया जाए। यही नहीं खुद विवेच्य कथाकार भी दिल्ली के 'राममनोहर लोहिया स्ताप' में मृत्यु से पहले नीमबेहोशी की हालत में जो बोलते उससे यही लगता है कि, जैसे वह गया के उसी मुहल्ले में गए हैं, जहॉ उनकी पैदाइश हुई थी।

निष्कर्ष : निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि, कार बदीउज्जमॉ का साठोत्तर हिंदी कथासाहित्य में न्य साधारण महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी हिंदी कथा साहित्य के लिए शिल्प एवं शैली की दृष्टि से महत्वपूर्ण देन है, जिस से हिंदी कथा साहित्य को एक नई दृष्टि तथा दिशा मिलती हैं। उनकी रचनाएँ तथा चरित्र सृष्टि हिंदी कथा साहित्य जगत की अक्षय निधि हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. समकालीन कहानी समांतर कहानी–डॉ.विनय (पृ.52)
2. निकेत (जुलाई–सितम्बर–1995) (पृ.23)
3. चौथा ब्राम्हण–बदीउज्जमॉ (पृ.74)
4. पुल टूटते हुए बदीउज्जमॉ (पृ.56)
5. छाको की वापसी बदीउज्जमॉ (पृ.164)
6. सभापर्व–बदीउज्जमॉ (पृ.40)
7. वही. बदीउज्जमॉ (पृ.75)

ISSN 2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL